

विदेह

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३०

# आत्मतत्त्वविवेक

क्षणिकवाद, विज्ञानवाद, द्रव्य-गुण

आ आत्मतत्त्वक दार्शनिक समीक्षा



मूल संस्कृत : उदयनाचार्य

मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

विस्तृत साहित्यिक आ दार्शनिक समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

ISSN 2229-547X | 2026

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक  
सम्पादकीय  
खण्ड ३०  
आत्मतत्त्वविवेक

क्षणिकवाद, विज्ञानवाद, द्रव्य-गुण आ आत्मतत्त्वक दार्शनिक  
समीक्षा

मूल संस्कृत ग्रन्थकार : उदयनाचार्य

मैथिली अनुवाद आ सम्पादन : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X • २०२६

## प्रकाशन-विवरण

शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड : ३० • समीक्ष्य ग्रन्थ : आत्मतत्त्वविवेक

शास्त्रीय मूल लेखक : उदयनाचार्य • संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल पुस्तकक अनुवादक/संस्करणक अधिकार ओकर मूल प्रकाशन-विवरण अनुसार सुरक्षित । एहि आलोचनात्मक अध्ययनक विषय आ उद्धरण मूल द्विभाषिक Word पाण्डुलिपि पर आधारित अछि ।

प्रकाशन संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • ISSN 2229-547X

© प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर, २०२६ ।

## पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

ई समीक्षा उदयनाचार्यक संस्कृत मूल 'आत्मतत्त्वविवेक'क गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद आ पुस्तकमे उपलब्ध अंग्रेजी रूपान्तरक आलोचनात्मक अध्ययन अछि। एकर पाठाधार संलग्न द्विभाषिक Word संस्करण अछि।

शास्त्रीय मूल लेखन, अनुवादकक व्याख्यात्मक अध्याय आ आधुनिक सम्पादकीय सामग्रीक सीमा अलग राखल गेल अछि।

मूल अनुवादक चारि खण्डक प्रश्नक्रम स्पष्ट अछि : क्षणिक अस्तित्वक सिद्धान्त, बाह्य वास्तविकताक निषेध, गुण आ आश्रय-द्रव्यक भेद, तथा आत्माक सिद्धि। कृतिक आरम्भ दुःखसँ मुक्ति-पिपासासँ होइत अछि आ अन्त मोक्षक स्वरूपपर पहुँचैत अछि। एहि कारण ई विमर्श केवल सिद्धान्तक संग्रह नहि, एकटा सुनिश्चित ज्ञान-यात्रा अछि।

भारतीय न्याय-वैशेषिक विवेचन, बौद्ध प्रतिपक्षक सटीक प्रस्तुति, भाषिक औचित्य, वाक्य-स्तरीय निषेध, दार्शनिक अनुमान आ आधुनिक तुलनात्मक अध्ययनक कसौटीसँ मूल्याङ्कन कएल गेल अछि। संस्कृतक स्वतंत्र आलोचनात्मक पाठ आ संस्करणभेदक सम्यक् निरीक्षण नहि भेला कारण मूल संस्कृत प्रति-शब्द पूर्ण निष्ठाक निष्कर्ष एतय नहि देल गेल अछि।

## अनुक्रम

|                                           |    |
|-------------------------------------------|----|
| 01. ग्रन्थक वास्तविक रचना आ श्रेयक सीमा   | 6  |
| 02. मङ्गलपद्य, दुःख आ आत्मजिज्ञासा        | 7  |
| 03. आत्माक विरोधमे चारि दार्शनिक प्रस्ताव | 8  |
| 04. क्षणिकताक सार्वत्रिक अनुमान           | 9  |
| 05. व्याप्ति, पक्ष आ हेतुक प्रामाणिकता    | 10 |
| 06. अपोहवाद : निषेध द्वारा शब्दार्थ       | 11 |
| 07. समावेश, बहिष्कार आ सामान्यता          | 12 |
| 08. संस्कार, संकेत आ शब्दार्थक नियमन      | 13 |
| 09. बीज-अङ्कुरक कारणगत दृष्टान्त          | 14 |
| 10. विलम्ब, अविलम्ब आ सहायक कारण          | 15 |
| 11. स्वभाव, सामर्थ्य आ उत्पादनक शर्त      | 16 |
| 12. उत्पादकता आ विरोधाभासक तर्क           | 17 |
| 13. विनाशक कारण आ क्षणिकताक दोसर मार्ग    | 18 |
| 14. स्थायित्वक सकारात्मक प्रतिपादन        | 19 |
| 15. जाति, व्यक्ति आ सामान्यक ज्ञान        | 20 |
| 16. सविकल्पक प्रत्यक्ष आ सामान्यता        | 21 |
| 17. चेतनामात्रवादक अनुमानक सीमा           | 22 |
| 18. चित्रज्ञान आ अनेकत्वक अनुभव           | 23 |
| 19. ज्ञाता-ज्ञेय सम्बन्धक अनिर्णय         | 24 |
| 20. ज्ञान-सम्बन्धक न्यायीय प्रतिरक्षा     | 25 |
| 21. अवयव-अवयवी आ संपूर्णक यथार्थता        | 26 |
| 22. परमाणु, माध्यमिक मत आ वस्तुनिष्ठता    | 27 |
| 23. गुण आ द्रव्यक भेद                     | 28 |
| 24. सह-अवस्थान आ एके फल उत्पन्न करब       | 29 |

|                                                     |    |
|-----------------------------------------------------|----|
| 25. आत्माक प्रत्यक्ष, अनुमान आ अन्तरानुभव           | 30 |
| 26. प्रत्यभिज्ञा आ व्यक्तिक निरन्तरता               | 31 |
| 27. शरीर, चेतना आ आत्मत्वक मतभेद                    | 32 |
| 28. आलयविज्ञानक प्रतिपक्ष आ स्मृतिक समस्या          | 33 |
| 29. ईश्वरानुमान आ कार्य-कारणक विस्तार               | 34 |
| 30. वेदप्रामाण्य आ शब्दप्रमाणक शर्त                 | 35 |
| 31. देहरहित कर्ता आ उपाधि-दोष                       | 36 |
| 32. सर्वज्ञता आ अनुमानक सीमित बल                    | 37 |
| 33. मोक्ष : दुःख-निवृत्ति आ सुखक प्रश्न             | 38 |
| 34. अनुवादक गद्य आ पारिभाषिक अनुशासन                | 39 |
| 35. द्विभाषिक पाठ : उपयोगिता आ प्रमाण-सीमा          | 40 |
| 36. समीक्षा-पद्धति आ सम्पादकीय परिशिष्ट             | 41 |
| 37. समेकित मूल्याङ्कन : आत्मा-विवादक दार्शनिक कसौटी | 42 |
| समेकित मूल्याङ्कन                                   |    |
| पारिभाषिक पद-सहचर                                   |    |
| समीक्ष्य पाठक विषय-मानचित्र                         |    |
| ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र                           |    |

## 1. ग्रन्थक वास्तविक रचना आ श्रेयक सीमा

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • आत्माक स्वरूपसम्बन्धी  
न्याय-वैशेषिक मतक विरोधी सिद्धान्त

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आत्माक वास्तविकताक विरोधमे मुख्यतः ई मत सभ अछि—सभ किछु मात्र एक क्षण धरि रहैत अछि; चेतनाक अतिरिक्त कोनो वस्तु वास्तविक नहि अछि; गुण आ गुणयुक्त वस्तुमे कोनो भेद नहि अछि; आ जाहि सत्ताकें आत्मा कहल जाइत अछि, ओकर कहियो प्रत्यक्ष वा अनुभव नहि होइत अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

एहि संस्करणमे समीक्षात्मक निबन्ध, चारि खण्डक मैथिली अनुवाद, विस्तृत ग्रन्थसूची आ फेर अंग्रेजी भाग एकहि पुस्तकमे राखल गेल अछि। एहि वास्तुक आधारपर पाठककें पहिने ई निश्चित करबाक चाही जे कतय उदयनक तर्कक अनूदित प्रस्तुति अछि आ कतय अनुवादक अथवा सम्पादकक अपन व्याख्या। एकर भेद बिसरलासँ उत्तरकालीन विवेचनक निष्कर्ष मूल शास्त्रक कथन बुझाए लागैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

मूल ग्रन्थकार उदयनाचार्य, मैथिली अनुवादक गजेन्द्र ठाकुर आ एहि शृंखलाक समीक्षक आशीष अनचिन्हारक भूमिका स्वतन्त्र अछि। पहिने सँ उपस्थित विस्तृत प्रशंसा स्वतः पाठ-साक्ष्य नहि; तर्कक प्रमाण स्वयं अनुवादित चारू खण्डमे खोजल जाएत।

## 2. मङ्गलपद्य, दुःख आ आत्मजिज्ञासा

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • स्तुतिपरक पद्य

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“प्राचीन आचार्य सभमे सर्वश्रेष्ठ, समस्त लोकक अधिपति आ सृष्टिकर्ता परम सत्ताकेँ प्रणाम ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

आरम्भक वन्दना सृष्टिकर्ता, वचनक नियम आ कल्याणकारी कर्मकेँ एकहि रूपकमे जोड़ैत अछि। तकर ठीक बाद दुःखसँ छुटकाराक सामान्य मानवीय आकांक्षा आत्मतत्त्वक प्रश्नकेँ व्यावहारिक आवश्यकता बनबैत अछि। एना सिद्धान्तक पथ सैद्धान्तिक जिज्ञासासँ पहिने अस्तित्वगत प्रश्नसँ खुलैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

वन्दनासँ ईश्वरक सिद्धि नहि होइत; ओ ग्रन्थक आरम्भिक दार्शनिक प्रतिबद्धता प्रकट करैत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ ओकरा प्रमाण आ काव्य-उपक्रमक अलग भूमिका मे पढ़ब जरूरी अछि। शान्त रसक सम्भावना एतय अछि, मुदा ओकरा तर्क-सिद्धान्तक सत्यतासँ नहि मिलाएब।

### 3. आत्माक विरोधमे चारि दार्शनिक प्रस्ताव

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • आत्माक स्वरूपसम्बन्धी  
न्याय-वैशेषिक मतक विरोधी सिद्धान्त

#### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आत्माक वास्तविकताक विरोधमे मुख्यतः ई मत सभ अछि—सभ किछु मात्र एक क्षण धरि रहैत अछि; चेतनाक अतिरिक्त कोनो वस्तु वास्तविक नहि अछि; गुण आ गुणयुक्त वस्तुमे कोनो भेद नहि अछि; आ जाहि सत्ताकें आत्मा कहल जाइत अछि, ओकर कहियो प्रत्यक्ष वा अनुभव नहि होइत अछि।।”

#### दार्शनिक पाठ-विवेचन

अनूदित पाठ आत्माक यथार्थताकें चुनौती देनिहार चारि आधार चिन्हित करैत अछि—सर्वक्षणिकता, चेतनामात्रवाद, गुण-गुणीक अभेद आ आत्माक अग्रहण। एहन क्रम पाठककें बुझबैत अछि जे आत्मा सम्बन्धी विवाद केवल धार्मिक विश्वास नहि, वस्तु-स्वरूप आ ज्ञानमीमांसाक भी विवाद अछि।

#### आलोचनात्मक परीक्षण

चारू विरोधकें एकहि समरूप “बौद्ध” कथन मानि लेब ऐतिहासिक अस्पष्टता होयत। बौद्ध परम्परामे अनेक शाखा आ मतान्तर अछि। अनुवादक जँ प्रत्येक मतक विशिष्ट प्रतिज्ञा तथा ओकर प्रतिवादकें स्पष्ट रूपसँ अलग राखथि, तँ शास्त्रार्थक न्यायसंगत प्रस्तुति आरो सुदृढ़ बनत।

## 4. क्षणिकताक सार्वत्रिक अनुमान

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • सार्वत्रिक क्षणिकताक अनुमान द्वारा स्थापना आ अविनाभाव असिद्ध होयबाक आधारपर ओकर खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उपर्युक्त चारू सिद्धान्तमे पहिल सिद्धान्तक कोनो प्रमाणसिद्ध आधार नहि रहने ओ मान्य नहि भऽ सकैत अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

क्षणिकताक विरोधमे मुख्य सवाल ई नहि जे संसारमे परिवर्तन होइत अछि कि नहि; सवाल ई अछि जे “यथार्थ” होयबसँ “क्षणिक” होयब अनिवार्य रूपसँ निकलैत अछि कि नहि। आधार-पाठ एहिठाम व्याप्ति आ साध्यक अविनाभावक परीक्षा करैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

क्षणिक वस्तुक उदाहरण भरिसँ सभ वस्तुक क्षणिकता प्रमाणित नहि भऽ सकैत। मुदा स्थायित्वक पक्षधरकँ सेहो “किछु वस्तु टिकैत अछि,” कथन लेल स्वतन्त्र प्रमाण देबाक होयत। विवादक एहि द्विपक्षीय भारकँ पहचानब न्याय-पद्धतिक मूल अनुशासन अछि।

## 5. व्याप्ति, पक्ष आ हेतुक प्रामाणिकता

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • अविनाभाव सिद्ध करबाक प्रमाण आ ओकर विस्तृत विचार

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“की एना मानल जाए जे एके वस्तुमे उत्पादन-समर्थता आ उत्पादन-असमर्थता रूप परस्पर-विरोधी गुणक सहस्थिति देखाइत अछि; एहि सहस्थितिसँ वस्तुक भिन्नता अनुमानित होइत अछि; आ ओ भिन्नता फेर उक्त अविनाभावकेँ सिद्ध करैत अछि ? नहि ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

सामर्थ्य-असामर्थ्यक सहस्थिति सँ भेद निकालबाक प्रयासमे तर्कक प्रारम्भिक पदसभ एकर पश्चात् निष्कर्ष पर निर्भर पड़ैत अछि । ग्रन्थ एहिना चरण-दर-चरण पूछैत अछि जे जे आधार सँ भेद सिद्ध होयत, ओ स्वयं कथँ सिद्ध अछि ।

### आलोचनात्मक परीक्षण

ई शैली नव्य-न्यायक व्यापक विश्लेषणात्मक संस्कारक पूर्वपीठिका अछि, यद्यपि उदयनक विशिष्ट पदावलीकेँ उत्तरकालीन नव्य-न्यायक सम्पूर्ण तकनीकक समान नहि ठहराएब । मैथिली अनुवादमे हेतु-साध्य-व्याप्ति जकाँ पद स्थिर राखब बुझबाक सुविधा आ शास्त्रीय निष्ठा दुनू लेल आवश्यक अछि ।

## 6. अपोहवाद : निषेध द्वारा शब्दार्थ

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • एक-दोसरक बहिष्कृत वस्तुकेँ परस्पर बाहर करबाक आधारपर अपोहक भेद सम्भव नहि

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“दू अपोहक कथित भेद एहि कारणसँ नहि भऽ सकैत अछि जे प्रत्येक अपोह दोसर अपोहक बहिष्कृत वस्तुकेँ बाहर करैत अछि—जेना गोत्व आ अश्वत्व क्रमशः अगाय आ अघोडाक बहिष्कार करैत अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

अपोहवादक प्रतिवादमे ग्रन्थ पूछैत अछि जे “अगाय” आ “अघोडा” सन निषेधसभ आपसी भिन्नता कोना पबैत अछि। नकारात्मक परिसीमन द्वारा अर्थ बनबाक सिद्धान्तकेँ मात्र हास्यास्पद नहि कहि, ओकर अर्थ-विभाजनक अन्तर्निहित समस्या प्रस्तुत कएल गेल अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

तथापि बहिष्कारकेँ मात्र वस्तुक अभाव मानबासँ बौद्ध अर्थसिद्धान्तक संज्ञानात्मक पक्ष छूटि सकैत अछि। आलोचनाक उचित कसौटी ई जे अनूदित खण्ड प्रतिपक्षक तर्कक सर्वोत्तम सम्भव रूप देबैत अछि कि नहि। शब्दार्थक विवादमे व्यवहारिक प्रयोजन आ सामान्यता दुनू दिस देखब जरूरी अछि।

## 7. समावेश, बहिष्कार आ सामान्यता

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • अपोह सभमे आंशिक परस्पर-समावेश आ आंशिक परस्पर-बहिष्कार सम्भव नहि

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उक्त भेद एहि कारणसँ सेहो नहि भऽ सकैत अछि जे प्रत्येक अपोह दोसरक बहिष्कृत वस्तु सभमे किछुकें समाहित करैत हो आ किछुकें बाहर करैत हो—जेना वृक्षत्व आ अशोक-वृक्षत्वक सम्बन्ध अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

वृक्षत्व आ अशोक-वृक्षत्वक उदाहरण वर्ग आ उपवर्गक सम्बन्धकें ठोस बनबैत अछि। अपन परिभाषाक क्षेत्रक सीमा स्थिर नहि हो तँ अपोहक द्विपदी निषेध अर्थनिश्चय नहि कऽ पवैत—ई ग्रन्थक महत्वपूर्ण आपत्ति अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

मुदा वर्गीकरणक व्यवहार सदैव कठोर समानता-असमानताक युग्मसँ नहि चलैत; सन्दर्भ बदललापर “वृक्ष” शब्दक काज अलग भऽ सकैत अछि। ई आधुनिक प्रश्न पाठसँ विमर्शक संभावना खोलैत अछि, मूल ग्रन्थमे पूर्वे स्पष्ट रूपसँ उपस्थित सिद्धान्त मानि ओकर श्रेय नहि देबाक चाही।

## 8. संस्कार, संकेत आ शब्दार्थक नियमन

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • शब्दार्थक नियामकक निरूपण आ समीक्षा

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“शब्दक अर्थ केँ नियमित वा निर्धारित करयवला तत्त्व या तँ शब्द-संकेत अछि, अथवा शब्दक अपन स्वाभाविक शक्ति।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

वाचक शब्दक अर्थ संस्कार, रूढ़ि अथवा व्यवहारसँ कोना निश्चित होइत अछि, एहि प्रश्नमे मनक आ वस्तुक सम्बन्ध सामने अबैत अछि। अनुवादक “संकेत” आ “संस्कार” सन पारिभाषिक शब्दकेँ बचबैत छथि; ई सटीकता आवश्यक अछि, कारण “अर्थ” आ “धारणा” समानार्थक नहि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

शब्दार्थक अभिप्रायकेँ पाठकक मानसक निजी अनुभव मात्र बना देब तर्कक साझा परीक्षण असम्भव कऽ देत। एहि ठाम प्रश्न उठैत अछि जे सामान्य भाषिक सहमति मात्र प्रथा अछि अथवा अर्थक वस्तुगत आधार सहो अछि। ग्रन्थक प्रतिपक्ष-उत्तर एहि द्वन्द्वकेँ खोलैत अछि।

## 9. बीज-अङ्कुरक कारणगत दृष्टान्त

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • कारणवस्तुमे रहएवला सामर्थ्यक तीन सम्भावित रूप

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“कारणवस्तुक विशेषता रूप सामर्थ्यकेँ तीन ढङ्गसँ बुझल जा सकैत अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

बीजत्व, अंकुरत्व आ सहायक परिस्थितिक उदाहरणमे हेतु-कार्य सम्बन्ध लोकानुभवसँ मिलैत अछि। माटि, पानि, ताप जकाँ साधनक उपलब्धता बिना “समर्थ” बीज सेहो अंकुर नहि देत—ई प्रत्यक्ष तर्कग्राह्य अन्तर पाठकेँ कठिन सामान्यतासँ बचबैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

परिस्थिति-निरपेक्ष “तुरन्त उत्पादक” स्वभाव मानबासँ परिवर्तनक समय समझाएब कठिन अछि। मुदा उदाहरणसँ सिद्ध नियत कारणता आ सार्वत्रिक वस्तु-स्थायित्व बीच अलग प्रमाण-चरण आवश्यक अछि। यहीं अनुवादकक व्याख्या सीमित दाबीकेँ अनावश्यक रूपेँ सार्वभौम नहि करथि।

## 10. विलम्ब, अविलम्ब आ सहायक कारण

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • वस्तुक स्वभावसम्बन्धी प्रश्न

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन प्रश्न ई अछि—एतेक विवेचनक बाद वस्तुक स्वभावक विषयमे निष्कर्ष की ? उत्पादन या तँ विलम्बसँ होयत, अथवा तत्काल; एहि दुनूक अतिरिक्त दोसर विकल्प नहि ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

“तत्काल” कहबाक अर्थ बीजक उत्पत्तिक क्षण कि सहायक परिस्थिति जुटलाक क्षण—एहि भेद बिना विवाद अर्थहीन भऽ जाइत । अनूदित पाठ विकल्प खोलि शब्दार्थक अस्पष्टताकेँ तर्कक दोषक रूपमे पहचानैत अछि ।

### आलोचनात्मक परीक्षण

कालसम्बन्धी ई स्पष्टता अनुवादकक एकटा उपयोगी उपलब्धि अछि । मुदा कारणक नियमितता केवल समयक पूर्वापर क्रम नहि; नियत शर्त आ निषेधात्मक परीक्षण सहो अपेक्षित अछि । एहि भेदसँ ग्रन्थक प्रमाण-दृष्टान्त पर्याप्त तर्कसमीक्षा पबैत अछि ।

## 11. स्वभाव, सामर्थ्य आ उत्पादनक शर्त

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • सामर्थ्यक दोसर रूपक विस्तृत खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“फेर कहल जा सकैत अछि—जँ कोनो वस्तुक स्वभाव तत्काल उत्पादन करब हो आ ओ स्वभाव ओकरामे पहिनहिसँ रहैत हो, तँ देवता सभक सय-सय श्रापो ओकरा पहिनेहि समयमे अपन कार्य उत्पन्न करबासँ बलपूर्वक रोकि नहि सकत।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

कोनो वस्तुक सामर्थ्य ओकर अदृश्य निजी गुण अछि कि स्थितिक सम्बन्ध, ई प्रश्न बीज-दृष्टान्तक मूल गाँठ अछि। तत्काल-उत्पादनकें पूर्वसिद्ध मानि प्रतिपक्षक अनुमान पढ़ला पर प्रश्नाधीन बातकें निष्कर्षमे पहिनहि राखल गेल होयत।

### आलोचनात्मक परीक्षण

मूल पाठ वस्तुनिष्ठ नियमन खोजैत अछि; तथापि सहायक घटकसभक सूची पूर्ण नहि हो तँ प्रयोगात्मक अनुमानक सीमा बचैत अछि। एहि सीमा स्वीकार करब तर्कक दुर्बलता नहि, दर्शनक बौद्धिक ईमानदारी अछि।

## 12. उत्पादकता आ विरोधाभासक तर्क

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • एके व्यक्तिवस्तु उत्पादक आ अनुत्पादक दुनू नहि भऽ सकैत अछि—एहि तर्कक प्रस्ताव

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“परस्पर-विरोधी गुणक सहस्थिति नहि हो, ताहिसँ किछु नहि ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

एके कारणकें उत्पादक आ अनुत्पादक दुनू कहल जा सकैत अछि कि नहि, एहि प्रश्नक उत्तर समय आ शर्तक पृथकीकरणपर निर्भर अछि । एके अवस्था, एके समय आ एके अर्थमे परस्पर विरोधी धर्म नहि ठहरैत; बदलेल परिस्थिति मे विरोधाभास अनिवार्य नहि ।

### आलोचनात्मक परीक्षण

समीक्षा एतय ध्यान दैत अछि जे दार्शनिक विवादकें “विरोध” नाम दैव पर्याप्त नहि: विरोधक रूप तार्किक, कालिक वा सम्बन्धात्मक कोन अछि से कहबाक चाही । एहि स्पष्टताक बिना भाषिक पराजयकें वास्तविक प्रमाण मानल जायत ।

### 13. विनाशक कारण आ क्षणिकताक दोसर मार्ग

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • विनाशक अनिवार्यतापर आधारित क्षणिकताक नूतन प्रमाणक समीक्षा

#### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन विनाशक अनिवार्य घटित होयब ओकर अकारणता सिद्ध करय, आ अकारणता क्षणिकता सिद्ध करय ॥”

#### दार्शनिक पाठ-विवेचन

पाठ क्षणिकताकेँ केवल उत्पादक सामर्थ्यसँ नहि, विनाशक अनिवार्यतासँ सेहो सिद्ध करबाक चेष्टाक समीक्षा करैत अछि। वस्तु आ विनाशक सम्बन्धकेँ अलग-अलग सम्भावनामे बाँटि प्रत्याख्यान देल गेल अछि।

#### आलोचनात्मक परीक्षण

एतय विधिक लाभ विकल्प-परीक्षा अछि। मुदा विनाशक अनिवार्यता निरस्त भेलोपर वस्तुक अनन्त स्थायित्व नहि सिद्ध होइत; ओकर अर्थ केवल प्रस्तुत अनुमानक अपर्याप्तता अछि। ई सूक्ष्म भेद समीक्षाक प्रमुख संशोधनात्मक बिन्दु अछि।

## 14. स्थायित्वक सकारात्मक प्रतिपादन

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • वस्तु सभक स्थायित्वक सकारात्मक प्रमाण

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“वस्तु सभक स्थायित्व कोना सिद्ध होयत ? प्रत्यभिज्ञा आ जाति सभक क्षणिक होयबाक असम्भवताक आधार पर।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

विपक्षीक अनुमानकेँ दोषपूर्ण कहि देलाक बाद स्थायित्वक अपन प्रमाण आवश्यक अछि। पाठक एहि पड़ावपर दार्शनिक वादक नकारात्मक आ सकारात्मक कार्य अलग देखैत छथि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

वस्तुक पुनरपहचान, गुणक परिवर्तन आ कारणक निरन्तरताकेँ एकहि प्रश्न नहि मानबाक चाही। स्थायित्वक प्रमाण किस वस्तु वा किस द्रव्यक सन्दर्भमे काम करैत अछि, ताहि दायरा पर निर्भर ओकर बल होइत अछि।

## 15. जाति, व्यक्ति आ सामान्यक ज्ञान

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • जाति केँ अन्य-बहिष्कार  
मानयवला मतक खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“की बहिष्कारहि जाति अछि, से स्वयं अन्य बहिष्कारसँ अलग अछि, आ  
सकारात्मक वस्तु ओकर स्वरूपरूप बहिष्कारक प्रतियोगी अछि ? नहि ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

अपोहक खण्डन आगाँ बढ़िते जाति-व्यक्तिक सम्बन्ध आ सामान्य-ज्ञानक प्रश्न  
उठैत अछि । ज्ञान केवल पृथक वस्तुक अछि कि सामान्यताक सेहो, ई विवाद  
प्रत्यक्ष आ भाषा दुनूमे एकसाथ प्रवेश करैत अछि ।

### आलोचनात्मक परीक्षण

जातिक वास्तविकता स्वीकार करबाक अर्थ वस्तुसभक समान नामकेँ स्वतः  
बाह्य सत्ता देब नहि हो । अनूदित तर्कक शक्ति ओतबे धरि अछि जतय प्रमाण  
इन्द्रियज ज्ञान आ सामान्यरूपक निश्चयकेँ उचित रूपसँ जोड़ैत अछि ।

## 16. सविकल्पक प्रत्यक्ष आ सामान्यता

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • सविकल्पक जातिज्ञानक इन्द्रियजन्यता आ प्रत्यक्षताक समर्थन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“जँ प्रत्यक्ष होइतो जातिज्ञान इन्द्रियजन्य नहि, तँ निर्विकल्पक ज्ञान सेहो इन्द्रियजन्य नहि ठहरत।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

सविकल्पक जातिज्ञान प्रत्यक्षजन्य भऽ सकैत अछि—एहि समर्थनसँ संवेदन आ संकल्पनाक सम्बन्धक समस्या ठाढ़ होइत अछि। दर्शन प्रत्यक्षकें केवल अनुभवक निर्जीव छवि नहि मानि, निर्णय-सहित ज्ञानक रूपमे सेहो परखैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

व्याख्यामे “प्रत्यक्ष” शब्दक व्यापकता स्पष्ट रहबाक चाही; नहि तँ प्रत्यक्षमे पहिनहिसँ छिपल भाषिक मध्यस्थताकें अनावश्यक रूपसँ नकारल जाएत। न्याय आ बौद्ध तर्कक मतभेद एतय विधिसम्बन्धी अछि, मात्र शब्दक नहि।

## 17. चेतनामात्रवादक अनुमानक सीमा

समीक्ष्य स्थान : दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता • विज्ञानवादी अनुमानक दोषक निरूपण

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तीन अनुमानमे पहिलक साध्य सिद्ध करबाक लेल ‘सह-प्राकट्यक अनिवार्यता’, ज्ञानता’ वा ‘प्रकाशमानता’ आदि जे कोनो हेतु प्रस्तुत कयल जाए, ओ स्पष्ट रूपेँ दोषपूर्ण अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

दोसर खण्डमे ज्ञानसँ अलग वस्तुक यथार्थता पर प्रतिवाद अछि। ज्ञान आ ज्ञेय साथे उपस्थित भेला मात्र दुनूक अभिन्नता सिद्ध होइत अछि कि नहि—ई तर्कक केन्द्र अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

सह-उपलब्धि सम्बन्ध हो सकैत अछि, तत्त्वगत एकत्व नहि। मुदा बाह्य वस्तुक सिद्धि सेहो मात्र अलग नाम देलासँ नहि होइत; ज्ञानसँ वस्तु धरि पहुँचबाक वैध प्रमाण देबाक चाही। एहि दोहरी जिम्मेवारीसँ समीक्षा प्रतिपक्षकें न्याय दैत अछि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकें तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

## 18. चित्रज्ञान आ अनेकत्वक अनुभव

समीक्ष्य स्थान : दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता • चित्रज्ञानक विषयमे  
रत्नकीर्तिक मतक समीक्षा आ खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन ई तर्क हो—जेना कोनो वस्तुसँ भिन्न किछु मिथ्या रूपें ओही वस्तु  
बनि प्रकट होइत अछि, वस्तु अपनासँ भिन्न रूपमे प्रकट भेलो अपन स्वभाव  
नहि छोड़ैत।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

चित्रक बहुवर्ण आ अनुभूतिक एक क्षणक उदाहरणमे एकरूप ज्ञान अनेकता केना  
धारण करैत अछि, से जाँचल गेल अछि। एहि ठाम प्रत्यक्ष उदाहरणक  
आकर्षण पैघ अछि कारण पाठक अपन देखल संसारसँ तर्ककें जोड़ि सकैत  
छथि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

तथापि “चित्रमे अनेक रङ्ग” सँ “साक्षात् बाह्य द्रव्यक अलग सत्ता” तक  
पहुँचबाक अनेक मध्यवर्ती प्रतिज्ञा अछि। अनुवाद जँ एहि सीढ़ीकें स्पष्ट रखैत  
अछि तँ प्रमाणक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

## 19. ज्ञाता-ज्ञेय सम्बन्धक अनिर्णय

समीक्ष्य स्थान : दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता • ज्ञानसँ भिन्न वस्तु ओकर विषय होयबामे दोषक विचार

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“अन्ततः ज्ञानसँ भिन्न वस्तु ज्ञान द्वारा ज्ञात होयबामे दोष की ?कोनो दोष नहि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

ज्ञान अपन विषयसँ कोन सम्बन्धमे जुड़ैत अछि—क्रिया, समानता वा विषय-विशेषक नियम—एहि प्रश्नमे आत्मप्रकाश आ वस्तुग्रहणक दूनू मत कठिनाइमे पड़ैत अछि। अनूदित पाठ प्रतिपक्षपर लगाओल प्रश्न वापस न्यायमत दिशि घुरबाक सम्भावना स्वयं खोलैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

इएह शास्त्रार्थक वास्तविक सौन्दर्य अछि: दोसरकेँ लगाओल आपत्ति अपन मतपर जँ लागू हो, तकर समाधान सेहो अपेक्षित अछि। मैथिलीमे “ज्ञेय-ज्ञापक” भेदकेँ सटीक लिखल जाए तखन आधुनिक पाठकक भ्रम घटैत अछि।

## 20. ज्ञान-सम्बन्धक न्यायीय प्रतिरक्षा

समीक्ष्य स्थान : दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता • न्याय-वैशेषिक मतक ज्ञान-सम्बन्धक प्रतिरक्षा

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“प्रश्न हो—एहि ज्ञान-सम्बन्धक फल की ? उत्तर—बाह्य वस्तु-जगतमे ज्ञान-विषयक सम्बन्धमे व्यवहारक प्रवर्तन, आ भीतर ज्ञानक प्रकाश ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

ज्ञानक वस्तु-सम्बन्धकें स्थिर करबाक चेष्टामे न्याय-वैशेषिक भिन्न वस्तु, गुण, आत्मा आ ज्ञानेन्द्रियक सम्बन्ध जोड़ैत अछि । तर्कमे ओहि स्थलपर “सम्बन्ध” नामक पद स्वयं व्याख्याक विषय बनैत अछि ।

### आलोचनात्मक परीक्षण

एहि प्रतिरक्षाक शक्ति तखनहि मानल जाए जे सम्बन्ध पुनः एकटा तेसर अव्याख्येय कड़ी नहि बनि जाए । दार्शनिक आत्मपर्यवेक्षणक पाठ एतय मूल सिद्धान्तसँ कम महत्वपूर्ण नहि ।

## 21. अवयव-अवयवी आ संपूर्णक यथार्थता

समीक्ष्य स्थान : दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता • अवयवी वस्तुक  
वास्तविकता खण्डित करबाक बौद्ध तर्क

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन बौद्ध आ हुनकर प्रतिपक्षक बीच एक-दोसरक मतमे दोष देखबैत वाद  
होअय ॥”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

तृतीय प्रश्नक आरम्भमे अंशसभक अतिरिक्त समग्र नामक वस्तु मानबाक  
औचित्य उठैत अछि। वस्तुक अनेक भाग गनि लेनासँ एकत्व आ पहचानक  
व्यवहार समाप्त नहि भऽ जाइत—ई न्यायीय विचारक आकर्षण अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

मुदा समग्र स्वतंत्र द्रव्य अछि—ई निष्कर्ष लेल भागसभसँ ओकर  
अभिन्नता/भिन्नताक सूक्ष्म कसौटी जरूरी अछि। केवल व्यवहारक भाषा  
वस्तुगत स्वतन्त्रताक पर्याप्त साक्ष्य नहि।

## 22. परमाणु, माध्यमिक मत आ वस्तुनिष्ठता

समीक्ष्य स्थान : दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता • माध्यमिक मतक विचार

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एक अन्य वादी—माध्यमिक—भयसँ बचबाक लेल आँखि मूनि कहैत छथि,  
तखन चेतना सेहो समाप्त भऽ जाए।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

भाग-समग्र विवाद परमाणु आ शून्यवादक प्रतिवाद धरि बढ़ैत अछि। सब तर्ककें “बौद्ध अस्वीकार करैत अछि” कहि समेटब दू अलग स्तर—वस्तुक गठन आ दार्शनिक अस्तित्व-प्रतिज्ञा—बीचक अन्तर हेरा देत।

### आलोचनात्मक परीक्षण

न्यायमतक प्रतिवादकें समझबाक लेल उपलब्ध, विभाजन आ नकारक सिद्धान्त अलग परीक्षण चाही। अनुवादककें प्रतिपक्षक ऐतिहासिक नाम आ तर्कक सीमित रूप निर्दिष्ट करब आवश्यक अछि।

## 23. गुण आ द्रव्यक भेद

समीक्ष्य स्थान : तेसर खण्ड — द्रव्य-गुण • रङ्ग वा स्पर्श जकाँ एकल गुणकें पुनःपहचानक विषय मानबाक खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“जे किछु रङ्ग अछि, से स्पर्शो अछि—एना नहि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

तेसर खण्डमे रङ्ग, स्पर्श आदि गुणक अलग अस्तित्व आ आश्रय-द्रव्यक प्रश्न उठैत अछि। रंगक अनुभव मात्र अनुभवक कारणक पूर्ण व्याख्या नहि; असंख्य गुणक धारक वस्तु कोन अर्थमे एक अछि, से केन्द्रमे अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

गुणक पुनरपहचान, समान आश्रय आ समकालिकताकें द्रव्यक स्वतन्त्र प्रमाण बनाओल जाउ, तँ प्रत्येक बिन्दुक विरोधी उदाहरण जाँचब आवश्यक अछि। एही स्थिति तत्त्वमीमांसा कें मात्र नामकरणक खेल बनबासँ रोकैत अछि। एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकें तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

## 24. सह-अवस्थान आ एके फल उत्पन्न करब

समीक्ष्य स्थान : तेसर खण्ड — द्रव्य-गुण • तेसर आधार—एके फल उत्पन्न करब—क खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“पहिने कहल कारणसँ—अर्थात् प्रत्येक गुणक अलग उपादान-कारण होयबाक कारण—गुण सभकेँ एके फल उत्पन्न करएवला मानिकऽ सेहो समूह नहि बनाओल जा सकैत; गुण सभ द्वारा उत्पन्न कोनो एकात्मक फल अछि नहि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

गुणसभ एके स्थानमे वा एके समयमे होथि, अथवा एके परिणामसँ जुड़थि, एहिसँ हुनकर एके द्रव्य होयब निश्चित नहि। मूल पाठ एहि सम्भावनासभकेँ परीक्षा करैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

अनुवादकक लेल “आश्रय”, “फल”, “समान” सन पदक प्रसंगानुसार सीमा ठामठाम स्पष्ट राखब महत्वपूर्ण अछि। जखन तक समानता कोन स्तरक अछि से नहि कहल जाए, तखन वस्तुगत एकत्वक निष्कर्ष अस्थिर रहत।

## 25. आत्माक प्रत्यक्ष, अनुमान आ अन्तरानुभव

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • आत्माक वास्तविकताक प्रमाण आ ओकर प्रतिरक्षा

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“मुदा आत्माक अस्तित्वक प्रमाण की अछि? निश्चित रूपेँ प्रत्यक्ष ॥”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

चारिम खण्डमे प्रश्न अछि जे आत्मा इन्द्रियगोचर नहि भेला मात्रँ अवास्तविक नहि भऽ जाइत। आत्माकेँ जानबाक माध्यम प्रत्यक्ष, स्मृति, प्रत्यभिज्ञा वा अनुमान कोन अछि, एहि सूक्ष्म अन्तरमे ग्रन्थक दार्शनिक शक्ति अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

बाहरी इन्द्रियसँ अग्रहण आत्मानस्ती कहबाक पर्याप्त प्रमाण नहि—ई नकारात्मक सिद्धि; मुदा आत्माक सकारात्मक अस्तित्वक स्वतंत्र औचित्य सेहो आवश्यक अछि। एहि द्विविध निष्कर्षकेँ अलग राखब समीक्षाक जिम्मेदारी अछि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकेँ तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

## 26. प्रत्यभिज्ञा आ व्यक्तिक निरन्तरता

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • प्रत्यभिज्ञाक एक अन्य व्याख्या आ ओकर खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन मानि ली जे प्रत्यभिज्ञा कोनो विशेष सहायक कारणसँ निर्धारित होइत अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

“पहिनुक हमे एखनक हम” सन आत्मपहचानक तर्क कालक पार एके ज्ञाताक धारणाकेँ सहारा दैत अछि। स्मृति अनिवार्य रूपसँ वर्तमान अनुभवकेँ अतीतक अनुभवसँ जोड़ैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

किन्तु स्मृतिसँ एके अपरिवर्तनीय आत्मा सिद्ध होइत अछि कि व्यक्तित्वक सन्तति, ई खुलल प्रश्न अछि। न्यायमतक सिद्धि आ अन्य दर्शनक वैकल्पिक व्याख्या दू अलग दाबी अछि; समीक्षा एकरा प्रमाणक स्तरपर टकरबैत अछि।

## 27. शरीर, चेतना आ आत्मत्वक मतभेद

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • आत्मज्ञानक विषय शरीर भऽ सकैत अछि—एहि आपत्तिक खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“की आत्मज्ञानक विषय शरीर भऽ सकैत अछि ? नहि ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

आत्माकेँ देह मात्र मानब आ आत्माकेँ चेतना-मात्र मानब—दुनू विकल्पक अलग तर्क अछि । ग्रन्थ इन्द्रिय, शरीर, अनुभवकर्ता आ अनुभूतिक एके वस्तु होयबाक प्रस्तावकेँ चुनौती दैत अछि ।

### आलोचनात्मक परीक्षण

शरीरक परिवर्तन, चेतनाक क्षणिक रूप आ अनुभवक निरन्तरतासँ कौन तत्त्वकेँ अलग मानबाक आवश्यकता अछि, ओकर स्पष्ट प्रतिज्ञा देबाक चाही । अनुभवजन्य समस्या आ आध्यात्मिक समाधानकेँ बिना भेदक एक बनाओल नहि जाए ।

## 28. आलयविज्ञानक प्रतिपक्ष आ स्मृतिक समस्या

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • आलयविज्ञानक अज्ञानसँ प्रत्यभिज्ञा होइत अछि—एहि आपत्तिक विचार आ खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन ई व्याख्या मानल जाए जे आलयविज्ञान सभक अज्ञान प्रत्यभिज्ञाक कारण अछि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

बौद्ध आलयविज्ञानक सम्भावना प्रस्तुत भेला पर आत्मनिरन्तरताक बहस अधिक जटिल होइत अछि। जँ स्मृतिक सम्बद्धता प्रवाहरूप आधारसँ बुझल जा सकैत अछि, तखन नित्य आत्माक अनुमानक विशिष्ट आवश्यकता सिद्ध करब पड़त।

### आलोचनात्मक परीक्षण

एहि बिन्दुपर प्रतिपक्षक तर्कक यथाशक्ति मजबूत रूप प्रस्तुत करब सम्यक् समीक्षा अछि। आलयविज्ञानक नाम भरि लिखि खण्डन घोषित नहि; तकर संस्मरणात्मक कार्य आ न्यायीय पुनरपहचान बीच असल अन्तर चिन्हित होयत।

## 29. ईश्वरानुमान आ कार्य-कारणक विस्तार

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • ईश्वरसिद्धिक अनुमानपर आपत्ति आ ओकर उत्तर

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“कार्यत्वक उक्त विशेषता अविनाभावसँ सूचित नहि होइत, तँ अनुमानक समय ओकर ग्रहण नहि होइत।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

सृष्टिक कार्यसँ नियामक कर्ताक अनुमान करैत ग्रन्थ कारणताक सामान्य नियमकेँ विश्वव्यापी बनाबय चाहैत अछि। एतय गृहनिर्माण आ विश्वोत्पत्तिक बीच उपमानात्मक दूरी प्रमाणक मुख्य बाधा अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

विश्वक सम्पूर्णता स्वयं साधारण निर्मित कार्यजकाँ अछि—ई पक्ष सिद्ध भेलाक बाद सामान्य कर्तृत्वसँ ईश्वरक विशिष्ट कर्तृत्वक निष्कर्ष निकलत। स्रोत-पाठक दाबीकेँ ओहिना दाबी मानब आवश्यक, स्वतःसिद्ध परिणाम नहि।

### 30. वेदप्रामाण्य आ शब्दप्रमाणक शर्त

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • शास्त्रक प्रामाण्यक प्रमाण

#### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“शास्त्रक प्रामाण्यक प्रमाण की ? विश्वसनीय सत्ताक उपदेश होयब ।।”

#### दार्शनिक पाठ-विवेचन

वेदक प्रामाण्यक विवेचन ई पूछैत अछि जे आप्त-वचनक विश्वसनीयता कखन स्वीकार्य अछि । चिकित्साशास्त्रक दृष्टान्त ज्ञानक परीक्षणीय उपादेयताक चर्चा करबैत अछि ।

#### आलोचनात्मक परीक्षण

एक क्षेत्रक परीक्षणीय सफलता सँ दोसर क्षेत्रक पारलौकिक दाबी अनिवार्य रूपेँ सिद्ध होइत नहि । एहि छल्लाँग पर समीक्षा आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि; एहीसँ स्रोतक तर्ककेँ आजुक पाठक समक्ष निष्पक्ष रूपमे राखल जा सकैत अछि ।

### 31. देहरहित कर्ता आ उपाधि-दोष

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • शरीरधारी कर्तासँ  
सृष्टिकैँ उपाधि मानबाक खण्डन

#### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“‘शरीरधारी कर्तासँ उत्पन्न होयब’ उक्त अनुमानमे उपाधि नहि भऽ सकैत,  
कारण ओ ‘कर्तावान होयब’ रूप साध्यकैँ व्याप्त नहि करैत ॥”

#### दार्शनिक पाठ-विवेचन

जगतक ज्ञात कर्तासभ देहधारी छथि; तँ देहरहित सृष्टिकर्ताक हेतु व्यापक  
कहाय कि नहि? पाठ ई सम्भावित उपाधिक निवारणक प्रयास करैत अछि।

#### आलोचनात्मक परीक्षण

हुनकर प्रतिपक्ष कहि सकैत अछि जे ज्ञात दृष्टान्तक शरीरधारण आकस्मिक  
नहि। न्यायमतक उत्तर एतय उच्चतर क्षमता आ शरीरक अनावश्यकता स्पष्ट  
कए सकैत अछि, मुदा दूनू दाबी अलग-अलग परीक्षणक विषय रहत।

## 32. सर्वज्ञता आ अनुमानक सीमित बल

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • ईश्वर सर्वज्ञ नहि छथि  
—एहि मतक खण्डन

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“जे द्वयणुक उत्पन्न करैत छथि, ओ अदृश्य परमाणुकेँ सेहो जानैत छथि; आ परमाणुसँ उत्पन्न त्र्यणुकसँ आरम्भ कऽ जीव द्वारा विविध विषयक भोग धरि पहुँचयवला छ, ओ प्रकारक समस्त वास्तविक पदार्थकेँ सेहो जानैत छथि— एहि बातमे विवाद नहि।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

ईश्वरक कर्तृत्वसँ सर्वज्ञता धरि तर्क बढलापर साध्यक परिधि बदलैत अछि। कारण होयब, बुद्धिमान होयब आ समस्त तथ्य जानब—तीन स्वतंत्र गुण अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

जँ अनुवादक “सर्वज्ञ” पदकेँ व्यापक अर्थमे ग्रहण करैत छथि तखन बतौनाइ चाही जे कौन अनुमान ताहि परिधि धरि पहुँचैत अछि। दार्शनिक निष्कर्षक सूक्ष्मता प्रशस्ति-वाक्यक विस्तारसँ अधिक मूल्यवान अछि।

### 33. मोक्ष : दुःख-निवृत्ति आ सुखक प्रश्न

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • मोक्षक स्वरूपक विवेचन

#### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“तखन मोक्ष की ? आत्माक स्वरूपसँ दुःखक आत्यन्तिक निवृत्ति ।।”

#### दार्शनिक पाठ-विवेचन

अन्तिम खण्डमे मोक्षकेँ दुःखक समाप्ति मानि नित्य सुखरूप मोक्षक विकल्पपर तर्क उठैत अछि। ई भेद मूल ग्रन्थक आरम्भक दुःखपरक जिज्ञासाक संग रचनात्मक एकता बनबैत अछि।

#### आलोचनात्मक परीक्षण

नकारात्मक दुःखाभाव आ सकारात्मक आनन्दक बीच अन्तर मूल्य-दर्शनक एकटा महत्वपूर्ण प्रश्न अछि। एहि विवादकेँ आधुनिक सुख-दर्शनक समान ठहराएब जल्दबाजी होयत; मुदा तुलना सम्भव अछि जँ परम्परागत परिभाषाक सीमा स्पष्ट राखल जाए।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकेँ तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

### 34. अनुवादक गद्य आ पारिभाषिक अनुशासन

समीक्ष्य स्थान : पहिल खण्ड — क्षणिकवाद • विलम्ब आ अविलम्बक अर्थक स्पष्टीकरण

#### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“मुदा दोसर आ तेसर विकल्प प्रत्यक्षें सिद्ध अछि।।”

#### दार्शनिक पाठ-विवेचन

मैथिलीमे “अविनाभाव”, “अपोह”, “सामर्थ्य”, “प्रत्यभिज्ञा”, “गुण”, “आश्रय” जकाँ संज्ञासभ प्रयोगक प्रसंगमे टिकाओल गेल अछि। अर्थ-स्पष्टता लेल कतहु लम्बा प्रश्नोत्तर आ उदाहरण वाक्यभेद बनबैत अछि।

#### आलोचनात्मक परीक्षण

कठिन मूल वाक्यकें अधिक सरल करबाक प्रयास शास्त्रीय निषेधक क्षेत्र नहि बदलय। विशेषतः नहि, मात्र, सर्वत्र, कतहु जकाँ तार्किक परिमाणक सूचक अनुवादमे अर्थ-प्रमाण सँ पैघ भार उठबैत अछि। ई पदसभक निकट मिलान भावी सम्पादनक महत्त्वपूर्ण चरण रहत।

## 35. द्विभाषिक पाठ : उपयोगिता आ प्रमाण-सीमा

समीक्ष्य स्थान : अंग्रेजी रूपान्तर • Part I

### मूल अंग्रेजी पाठक साक्ष्य

*“Salutations to the Supreme Being, foremost among the ancient teachers, lord of all worlds, and creator.”*

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

मैथिली अनुवादक बाद अंग्रेजी खण्ड दैब शोधार्थी लेल उल्लेखनीय उपकरण अछि। पाठक एतयसँ दार्शनिक पदक परस्पर दूरी देखि सकैत छथि, आ मैथिली कथन पढबाक बाद अंग्रेजी विकल्पक अर्थभेद जाँचि सकैत छथि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

मुदा मैथिली आ अंग्रेजी दुनू एकहि अनुवाद-परम्पराक प्रस्तुत रूप अछि; ओहि द्विभाषिक मेलसँ मूल संस्कृतक प्रत्यक्ष निष्ठा पूर्णरूपेँ प्रमाणित नहि होइत। स्वतंत्र संस्कृत आलोचनात्मक संस्करण, पाठभेद आ पद-समन्वय बिना “शब्दशः शुद्धता”क दाबी स्थगित रहत।

## 36. समीक्षा-पद्धति आ सम्पादकीय परिशिष्ट

समीक्ष्य स्थान : ग्रन्थसूची • समापन पद्य

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“१. उदयनाचार्य. आत्मतत्त्वविवेक. जीवनन्द विद्यासागरक सम्पादनमे प्रकाशित आरम्भिक मुद्रित संस्करण ।।”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

पुस्तकक ग्रन्थसूची, भाषिक निबन्ध आ अनुवादित चारू खण्डकें अलग स्तरमे पढल गेल। अनेक ग्रन्थसूची प्रविष्टिक विशिष्ट प्रकाशन-विवरणक स्वतंत्र प्रमाणीकरण एतय नहि भेल, ताहि कारण तिनका स्रोत-प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे समांतर संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी अंश, अध्याय-आधारित सन्दर्भ, हस्तलिखित पाठभेदक आधार, पारिभाषिक अनुक्रम आ संशोधन-सूची उपयोगी होयत। ई अनुशंसा मूल ग्रन्थक महत्त्व घटबैत नहि; ओकर अध्ययनकें परीक्षणयोग्य बनबैत अछि।

## 37. समेकित मूल्याङ्कन : आत्मा-विवादक दार्शनिक कसौटी

समीक्ष्य स्थान : चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष • उपसंहार

### मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एहि साधनासँ ध्यानकर्ता संसारबन्धनसँ मुक्त होइत अछि॥”

### दार्शनिक पाठ-विवेचन

एहि ग्रन्थक चारि खण्ड परस्पर पृथक विवाद होइतहुँ ज्ञानक आश्रय आ वस्तुक स्थायित्वक साझा प्रश्नमे जुटैत अछि। क्षणिकताक निषेध, बाह्य वस्तुक स्वीकृति, गुण-द्रव्यक भेद आ आत्माक अनुमान अन्ततः एकटा न्यायीय विश्व-दृष्टि बनबैत अछि।

### आलोचनात्मक परीक्षण

समेकित आलोचनाक निष्कर्ष न तऽ प्रतिपक्षक आसान पराजय अछि, न स्रोतक सर्वसम्मत विजय। वास्तविक उपलब्धि प्रश्नक सूक्ष्मता, विकल्प-परीक्षा आ मैथिलीमे जटिल तर्कक वहन अछि; वास्तविक सीमा अन्य दर्शनक सशक्त प्रतिवाद आ संस्कृत आधार-पाठक स्वतन्त्र मिलानक आवश्यकता अछि।

## समेकित मूल्याङ्कन

चारू खण्ड आत्माक एकहि प्रतिज्ञाकेँ अलग-अलग ज्ञानमार्गसँ घेरैत अछि । पहिल खण्ड क्षणिकताक सार्वभौम अनुमानक व्याप्ति जाँचैत अछि; दोसर ज्ञान आ वस्तुक सम्बन्ध; तेसर अनुभवमे अनेक गुणक वस्तुगत आधार; चारिम कालक पार पुनरपहचान आ आत्माक सिद्धि । एहि परस्पर-निर्भरता बिना ग्रन्थकेँ चार स्वतंत्र खण्डनक संग्रह मात्र बुझल जायत ।

मूल लेखकक न्यायीय सिद्धान्तकेँ बौद्ध प्रतिपक्षक कई विकल्पक सामने रक्षा करबाक शैली एहि कृतिक प्रमुख दार्शनिक मूल्य अछि । मुदा विरोधीक अनुमान निरस्त करब आ नित्य आत्माक सिद्धि एकहि बात नहि; विभिन्न स्थलक उदाहरणसभक प्रमाण-दायरा चिन्हित राखल जाए ।

अनुवादमे जटिल तार्किक प्रश्नोत्तरक मैथिली रूप पाठक लेल ज्ञानक नवा प्रवेशद्वार अछि । तथापि परिभाषित पदक पुनरावृत्ति, लाम्ब वाक्य आ मूल संस्कृत पाठक अनुपस्थित तुलनात्मक समन्वय स्पष्ट सम्पादकीय सीमा अछि । प्रमाणित पुनर्मुद्रण लेल संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी त्रिभाषिक प्रत्यक्ष मिलान आ विषय-नाम अनुक्रम उपयोगी होयत ।

## पारिभाषिक पद-सहचर

निम्न सूची दार्शनिक सन्दर्भ बुझबाक सहायक अर्थ-सङ्केत अछि; एकरा मूल संस्कृत-अंग्रेजीक सत्यापित शब्दशः समांतर पाठ-सारणी नहि मानल जाए।

| मैथिली पद      | अंग्रेजी अवधारणा              |
|----------------|-------------------------------|
| क्षणिकता       | momentariness                 |
| अविनाभाव       | invariable concomitance       |
| अनुमान         | inference                     |
| अपोह           | exclusion                     |
| सामर्थ्य       | causal capacity               |
| सहायक कारण     | auxiliary cause               |
| जाति           | universal                     |
| व्यक्ति        | particular                    |
| सविकल्पक ज्ञान | determinate cognition         |
| विज्ञानवाद     | idealism / consciousness-only |
| ज्ञान          | cognition                     |
| ज्ञेय          | object of cognition           |
| द्रव्य         | substance                     |
| गुण            | quality                       |
| अवयव           | part                          |
| अवयवी          | whole                         |
| प्रत्यभिज्ञा   | recognition                   |
| आलयविज्ञान     | store-consciousness           |
| आत्मा          | self                          |
| मोक्ष          | liberation                    |

## समीक्ष्य पाठक विषय-मानचित्र

| क्र. | समीक्ष्य प्रकरण                          | मूल पाठ-खण्ड             |
|------|------------------------------------------|--------------------------|
| 1    | ग्रन्थक वास्तविक रचना<br>आ श्रेयक सीमा   | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 2    | मङ्गलपद्य, दुःख आ<br>आत्मजिज्ञासा        | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 3    | आत्माक विरोधमे चारि<br>दार्शनिक प्रस्ताव | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 4    | क्षणिकताक सार्वत्रिक<br>अनुमान           | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 5    | व्याप्ति, पक्ष आ हेतुक<br>प्रामाणिकता    | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 6    | अपोहवाद : निषेध द्वारा<br>शब्दार्थ       | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 7    | समावेश, बहिष्कार आ<br>सामान्यता          | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 8    | संस्कार, संकेत आ<br>शब्दार्थक नियमन      | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 9    | बीज-अङ्कुरक<br>कारणगत दृष्टान्त          | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 10   | विलम्ब, अविलम्ब आ<br>सहायक कारण          | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 11   | स्वभाव, सामर्थ्य आ<br>उत्पादनक शर्त      | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 12   | उत्पादकता आ<br>विरोधाभासक तर्क           | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 13   | विनाशक कारण आ<br>क्षणिकताक दोसर मार्ग    | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |
| 14   | स्थायित्वक सकारात्मक<br>प्रतिपादन        | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद |

|    |                                        |                            |
|----|----------------------------------------|----------------------------|
| 15 | जाति, व्यक्ति आ सामान्यक ज्ञान         | पहिल खण्ड — क्षणिकवाद      |
| 16 | सविकल्पक प्रत्यक्ष आ सामान्यता         | पहिल खण्ड — क्षणिकवाद      |
| 17 | चेतनामात्रवादक अनुमानक सीमा            | दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता |
| 18 | चित्रज्ञान आ अनेकत्वक अनुभव            | दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता |
| 19 | ज्ञाता-ज्ञेय सम्बन्धक अनिर्णय          | दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता |
| 20 | ज्ञान-सम्बन्धक न्यायीय प्रतिरक्षा      | दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता |
| 21 | अवयव-अवयवी आ संपूर्णक यथार्थता         | दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता |
| 22 | परमाणु, माध्यमिक मत आ वस्तुनिष्ठता     | दोसर खण्ड — बाह्य यथार्थता |
| 23 | गुण आ द्रव्यक भेद                      | तेसर खण्ड — द्रव्य-गुण     |
| 24 | सह-अवस्थान आ एके फल उत्पन्न करब        | तेसर खण्ड — द्रव्य-गुण     |
| 25 | आत्माक प्रत्यक्ष, अनुमान आ अन्तरानुभव  | चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष |
| 26 | प्रत्यभिज्ञा आ व्यक्तिक निरन्तरता      | चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष |
| 27 | शरीर, चेतना आ आत्मत्वक मतभेद           | चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष |
| 28 | आलयविज्ञानक प्रतिपक्ष आ स्मृतिक समस्या | चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष |
| 29 | ईश्वरानुमान आ कार्य-कारणक विस्तार      | चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष |
| 30 | वेदप्रामाण्य आ शब्दप्रमाणक शर्त        | चारिम खण्ड — आत्मा आ मोक्ष |

|    |                                                       |                               |
|----|-------------------------------------------------------|-------------------------------|
| 31 | देहरहित कर्ता आ<br>उपाधि-दोष                          | चारिम खण्ड — आत्मा<br>आ मोक्ष |
| 32 | सर्वज्ञता आ अनुमानक<br>सीमित बल                       | चारिम खण्ड — आत्मा<br>आ मोक्ष |
| 33 | मोक्ष : दुःख-निवृत्ति आ<br>सुखक प्रश्न                | चारिम खण्ड — आत्मा<br>आ मोक्ष |
| 34 | अनुवादक गद्य आ<br>पारिभाषिक अनुशासन                   | पहिल खण्ड —<br>क्षणिकवाद      |
| 35 | द्विभाषिक पाठ :<br>उपयोगिता आ प्रमाण-<br>सीमा         | अंग्रेजी रूपान्तर             |
| 36 | समीक्षा-पद्धति आ<br>सम्पादकीय परिशिष्ट                | ग्रन्थसूची                    |
| 37 | समेकित मूल्याङ्कन :<br>आत्मा-विवादक<br>दार्शनिक कसौटी | चारिम खण्ड — आत्मा<br>आ मोक्ष |

## ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र

उदयनाचार्य । आत्मतत्त्वविवेक । संस्कृत मूल; गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद  
आ संलग्न अंग्रेजी पाठ । विदेहक उपलब्ध द्विभाषिक पुस्तक-पाण्डुलिपि,  
२०२६ ।

उदयनाचार्य । आत्मतत्त्वविवेक । शास्त्रीय संस्कृत दर्शनग्रन्थ ।

उदयनाचार्य । न्यायकुसुमाञ्जलि । शास्त्रीय संस्कृत दर्शनग्रन्थ ।

गङ्गेश उपाध्याय । तत्त्वचिन्तामणि । न्याय-ज्ञानमीमांसा विषयक मूल संस्कृत  
ग्रन्थ ।

गौतम । न्यायसूत्र । न्यायपरम्पराक आधार-ग्रन्थ ।

वाचस्पति मिश्र । भामती । शंकराचार्यक ब्रह्मसूत्रभाष्यपर टीका ।

ग्रन्थसूचीमे अवलोकित संस्करणबाहेक प्रकाशन-वर्ष अथवा प्रकाशकक  
अप्रमाणित विवरण जोड़ल नहि गेल अछि ।

# आत्मतत्त्वविवेक

खण्ड ३० — मूल पाठक समीक्षा

उदयनाचार्यक आत्मतत्त्वविवेकक चारि  
खण्डक मैथिली-अंग्रेजी पाठाधारित समीक्षा।  
क्षणिकता, बाह्य यथार्थता, गुण-द्रव्य,  
आत्मसिद्धि आ मोक्षक तर्कक मूल्याङ्कन।  
प्रत्यभिज्ञा, कार्य-कारण आ शब्दार्थक  
समस्या पर पृथक आलोचनात्मक विवेचन।

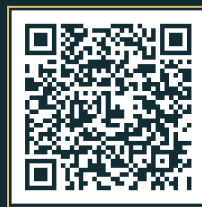
विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

अनुवादक : गजेन्द्र ठाकुर



VIDEHA.CO.IN



VIDEHA GITHUB

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

ISSN 2229-547X | 2026

www.videha.co.in